४. क्या करेगा तू बता

– डॉ. सुधाकर मिश्र

क्या करेगा तू बता, सबसे बड़ा धनवान बन,
है अगर बनना तुझे कुछ आदमी, इनसान बन ।
चल कि चलता देखकर तुझको, सहम जाए अचल,
सिर झुकाना ही पड़े, ऐसी न कोई चाल चल ।।

कर्म का अपने, ढिंढोरा पीटना बेकार है
हाथ में लेकर तुला, इतिहास जब तैयार है ।
हैं बुलाते मुक्त मन, संसार के सारे चमन,
शूल बनकर क्या करेगा, तू अमन का फूल बन ।।

सारहीनों को गगन छूना, बहुत आसान है,
सारवानों से धरा की गोद का सम्मान है ।
रत्न का अभिमान, सागर में कभी पलता नहीं,
आँधियों में जो उड़े, उनका पता चलता नहीं ।।

बन अगर बनना तुझे है, प्यार का हिमगिरि विरल,
या खुशी की गंध बन या बन दया-दरिया तरल ।
हाथ बन वह, गर्व से जिसको निहारें राखियाँ,
या कि बन कमजोर के संघर्ष की बैसाखियाँ ।।

सीख मत, बनना बड़ा तू खोखले आधार से,
भाग्य से उपलब्ध वैभव या किसी अधिकार से ।
प्यार से जो जीत ले, सबका हृदय, विश्वास, मन,
मूर्ति वह सत्कर्म की, सद्‌धर्म की साकार बन ।।

— ० —

परिचय

जन्म : १९३९, भदोही (उ.प्र.)
परिचय : कवित्व का गुण आपको विरासत में प्राप्त हुआ । सुधाकर मिश्र जी का कवि मन गहरे तक पैठ बना चुकी सामाजिक समस्याओं को लेकर सदा आंदोलित होता रहा है । ये समस्याएँ आपकी रचनाओं में स्थान पाती रहीं हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'शांति का सूरज', 'हिमाद्रि गर्जन', 'किरणिका', 'काव्यत्रयी' आदि।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत कविता में डॉ. सुधाकर मिश्र जी ने खोखले जीवन जीने, भाग्य पर निर्भर रहने, छीनकर सुख प्राप्त करने से हमें सचेत किया है । आपने हमें इनसान बनने, शांति फैलाने, प्यार बाँटने आदि के लिए प्रेरित किया है । आपका मानना है कि कमजोर का सहारा बनने, प्रेम से सबका हृदय जीतने में ही जीवन की सार्थकता है ।

शब्द वाटिका

अचल = स्थिर, अटल
ढिंढोरा = डुग्गी बजाकर की गई घोषणा, सूचना देना
शूल = काँटा, विकट पीड़ा
सारवान = अर्थपूर्ण, तात्त्विक
विरल = जो घना न हो, अल्प
खोखला = व्यर्थ, थोथा, खाली
सत्कर्म = अच्छा काम, पुण्य का काम

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) संजाल पूर्ण करो :

हम ऐसे बनें

(२) शब्द लिखकर उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

खुशी की →	संघर्ष की → ....
सत्कर्म →	कर्म का → ....

(३) पंक्तियाँ पूरी करो :

सारहीनों, ---------------

-------------- चलता नहीं ।।

(४) संक्षेप में उत्तर लिखो :

१. इनसान बनकर हमें इन बातों को अपनाना है –
२. हमें प्यार से इन्हें जीतना है –

सदैव ध्यान में रखो हमें सदैव मानवता की राह पर चलना है ।

कल्पना पल्लवन 'मैं तो इनसान बनूँगा/बनूँगी' इसपर अपने विचार स्पष्ट करो ।

भाषा बिंदु पाठों में प्रयुक्त अव्यय शब्द ढूँढ़कर उनके भेद लिखो तथा उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग करो ।

उपयोजित लेखन 'मैं गणित की पुस्तक बोल रही हूँ,' इस विषय पर निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन रहीम के किन्हीं चार नीतिपरक दोहों का भावार्थ लिखो ।